P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

योजना काल में उत्तर प्रदेश में निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमो का अध्ययन

राहुल कुमार मिश्रा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
दयानन्द बछरावां पी0जी0 कालेज,
बछरावां,रायबरेली

सारांश

आज भारत सहित पूरा विश्व निर्धनता की समस्या से पीड़ित है। उत्तर प्रदेश अखिल भारतीय स्तर पर सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है, जहॉ लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवासित है। यहॉ की भी प्रमुख समस्याओं में से निर्धनता मुख्य समस्या है। पूर्व में NSSO की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में 31.15 प्रतिशत निर्धनता पायी गई । जो कि अखिल भारतीय स्तर पर व्याप्त निर्धनता से अधिक रही । भारत के ऐतिहासिक विकास क्रम में समाज की आर्थिक संरचना और मानवीय जीवन की विभिन्न दशाओं के संबंध में जो विवरण प्राप्त होते है उससे यह स्पष्ट है कि भारतीय समाज में सामान्य वर्ग में जटिल और बहुआयामी निर्धनता व्याप्त रही है। इस जटिल समस्या के निराकरण हेतु राजनीतिज्ञों, सामाजिक विचाराको एवं अर्थशास्त्रियों द्वारा निरन्तर विचार विमर्श किया जाता रहा है। आज हमारा देश खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर है। वैज्ञानिकों एंव तकनीक की संख्या में विश्व में तीसरे स्थान पर है। सामाजिक असमानताओं को कम किया जा रहा है। जटिल प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। हमारे डाक्टरो तथा इंजीनियरो ने विदशों में अपना अस्तित्व बना लिया है। सामाजिक सेवाओं में जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास आदि सुविधाओं में वृद्धि हुई है। साक्षरता अनुपात 16.6 प्रतिशत से बढ़कर 74 प्रतिशत से भी अधिक हो गया है। जीवन स्तर में सुधार के लिए उपभोगीय वस्तुओं की उपलब्धि में वृद्धि हुई है। यदि वास्तव में हमें निर्धनता एवं बेरोजगारी उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करना है तो इनसे संबंधित कार्यक्रमों में समन्वय का होना आवश्यक है। क्योंकि समन्वय के बगैर निर्धनता का वास्तविक उन्मूलन कर पाना संभव नही है।

मुख्य शब्द : निर्धनता, बेरोजगारी उन्मूलन , सरकारी प्रयास, असफलता के कारक।

प्रस्तावना

आज भारत सहित पूरा विश्व निर्धनता की समस्या से पीड़ित है। निर्धनता की अवधारणा मूलतः आर्थिक दशाओं से सम्बद्ध है। यह अत्यधिक विवाद का विषय है कि निर्धन किसको स्वीकार किया जाए। सरकार का अपना मानदण्ड है तो विशेषज्ञो के भी अपने अलग–अलग मानदण्ड है निर्धनता भी दो तरह से विवेचित की जाती है एक तो तुलनात्मक और दूसरी असम्बद्ध। तुलनात्मक मापदण्ड के आधार पर प्रत्येक वह व्यक्ति निर्धन होगा जिसके पास दूसरे की तुलना मे कम सम्पत्ति है। जैविकीय दृष्टिकोण से यदि एक दिन भी किसी व्यक्ति को खाद्यान्न प्राप्त नही हो पाता है तो वह अन्य की तुलना में निर्धन कहा जाता है ।

निर्धनता को केवल आर्थिक असमानता के आधार पर ही परिभाषित नही किया जा सकता है बल्कि बेरोजगारी के आधार पर भी किया गया है। अकेले भारत में ही NSSO की वर्ष 2000 की रिपोर्ट के अनुसार 26.10 प्रतिशत जनसंख्या निर्धनता रेखा के नीचे जीवनयापन कर रही है जोकि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

हालॉकि स्वतंत्रता के पश्चात से ही योजनाओं की एक श्रृंखला सरकार द्वारा क्रियान्वित की जा रही है जोकि सन् 1951 से लेकर आज तक संचालित है जिसमें सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम तथा उसके अंतर्गत चलायें जाने वाले कार्यक्रमो के द्वारा निर्धनता उन्मूलन एवं बेरोजगारी उन्नमूल हेतु सतत् प्रयास किए है जिसके परिणामस्वरूप आज हमारा देश खाद्यान्न क्षेत्र में आत्मनिर्भर है। वैज्ञानिक एवं तकनीक की संख्या में विश्व में तीसरे स्थान पर है। सामाजिक असमानताओं को कम किया जा रहा है। जटिल प्रोद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। हम जैट इंजनों एवं उपयोग हो रहा है। हम जैट इंजनों एंव

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

टरवाइनों का निर्माण कर सकते है। हमारे डाक्टरों एवं सामाजिक सेवाओं में जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास, आदि सुविधाओं में काफी वृद्धि हुई है। साक्षरता अनुपात 16.6 प्रतिशत से बढ़कर 74 प्रतिशत से भी अधिक हो गई है। जीवन स्तर में सुधार के लिए उपभोगीय वस्तुओं की उपलब्धता में भी वृद्धि हुई है।

उत्तर प्रदेश अखिल भारतीय स्तर पर जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान रखता है। यहाँ पर लगभग 20 करोड़ की जनसंख्या निवासित है। पूर्व में स्पष्ट NSSO की रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश में 31.15 प्रतिशत जनसंख्या निर्धनता रेखा के नीचे जीवनयापन कर रही थी। जबकि इसी समय यह अखिल भारतीय स्तर पर यह 26.1 प्रतिशत के तुल्य रही। अतः बढ़ती जनसंख्या साथ ही साथ बढ़ती निर्धनता उत्तर प्रदेश की एक जटिल समस्या बनी हुई है। इसके निदान हेतु केन्द्र एंव राज्य के द्वारा प्रयास किये जाते रहे है। उत्तर प्रदेश में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार की दृष्टि से कृषि विकास का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रदेश मे लगभग 168 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कृषि की जाती है। कृषि की आधुनिक तकनीक का उपयोग कर उत्पादन तथा उत्पादकता में वृद्धि की दिशा में प्रयास का ही फल है कि कृषि ने प्रदेश को खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनाते हुए आवश्यकता से आधिक्य की ओर पहुँचाया है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है ग्रामीण आर्थिक विकास की प्रक्रिया का अध्ययन करना क्योंकि भारत को गॉवों का देश कहा जाता है क्योंकि यहॉ पर लगभग सात लाख ग्राम है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए चलाए गए निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों के अंतर्गत बेरोजगारो को रोजगार, शिक्षा का स्तर, पेयजल, एवं सिंचाई सुविधायें, स्वास्थ्य सेवा आदि का अध्ययन करना है कि यह कार्यक्रम कहॉ तक ग्रामीण विकास करने मे सफल रहे है। भारत में स्वाधीनता के पश्चात् से ही निर्धनता एक गंभीर समस्या बनी हुई है, क्योंकि इसकी जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। निर्धनता से मुक्ति तथा इसका उन्मूलन दीर्घकालिक लक्ष्य होना चाहिए तथा विकास की व्यूह रचना की एक अनिवार्य मद होनी चाहिए।

निर्धनता के मापन की विधियाँ

भारतीय संन्दर्भ में निर्धनता मापन के संबंध में जो भी प्रविधियाँ अपनायी जाती है वह एक निश्चित जीवनस्तर के समकक्ष अभिकल्पित निर्धनता से संबंधित होती है। निर्धनता किस स्तर तक है इसका मूल्यांकन करने के लिए यह प्रस्थापित किया जाता है कि समाज में एक निश्चित स्तर पर जीवनयापन करना सर्वसाधारण के लिए आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से निर्धनता की प्रकृति एंव उसके स्तर का परिभाषीकरण जीवन स्तर के निर्धारित रेखा के नीचे और ऊपर निवास करने वाली जनसंख्या की अनुपात के आधार पर सम्भव होता है। निर्धनता मापन को अन्य प्रतीको से भी इंगित किया जा सकता है। सन् 1962 में ड0 प्रो0 गाडगिल, पी0एस0 लोकनाथन, बी0 एन0 गांगुली, राव, मसानी, मेहता, श्रीमन्नारायण, पंत और इंजीनियरों ने विदेशो में अपना स्थान बना लिया है। सहस्त्रबुद्धे के अध्ययन समूह द्वारा यह संस्तुत किया गया था कि 1960–61 के मूल्यों पर प्रतिव्यक्ति प्रतिमाह 20 रूपये मानक खपत निर्धनता रेखा के रूप में स्वीकार की जा सकती है। इस समूह द्वारा कुल खपत में चिकित्सा एंव शिक्षा सुविधाओं के लिए व्यय को सम्मिलित नही किया गया था। इसके पश्चात् निर्धनता का मापन प्रतिव्यक्ति कैलौरी की खपत के आधार पर निर्धारित किया गया जिसके आधार पर जिस व्यक्ति को प्रतिदिन शहरी एंव ग्रामीण क्षेत्र में क्रमशः 2100 एवं 2400 कैलोरी प्राप्त न हो सके उसे निर्धनता रेखा के नीचे माना जाएगा। वर्तमान मे सर्वाधिक प्रचलित डी0टी0 लकड़ वाला के आधार पर प्रस्तुत प्रत्येक राज्यों के लिए भिन्न–भिन्न प्रस्तुत प्रत्येक राज्यो के लिए भिन्न–भिन्न प्रस्तुत निर्धनता की रेखाये है जिसके आधार पर उपरोक्त राज्यों में निर्धनता का अवकलन किया जाता है।

निर्धनता निवारण हेतु सरकार द्वारा किये गए प्रयास

सरकार द्वारा निर्धनता निवारण हेतु समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया गया है। उत्तर प्रदेश ग्रामीण अर्थव्यवस्था आधारित प्रदश हैं यहॉ 97,814 आबाद ग्राम तथा 51,914 ग्राम सभाये है। प्रदेश में लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है अतः यहॉ पर निर्धनता भी उच्च स्तर पर विद्यमान है। अतः प्रत्येक पंचवर्षीय योजनओं में सरकार द्वारा निर्धनता निवारण एंव बेरोजगारी उन्मूलन हेतु कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जाता रहा है जिसमें से प्रमुख रूप से एकीकृत ग्राम विकास योजना (IRDP) 1980–81, ट्राइसेम (1979–80), ड्वाकरा (1983–84), उन्नत टूल किट प्रोग्राम (1992–93), गंगा कल्याण योजना, 10 लाख कूप योजना (1989–90), स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (1999) महात्मा गॉधी रोजगार गांरटी योजना इत्यादि प्रमुख कार्यक्रम रहे है।

निर्धनता बेरोजगारी तथा आर्थिक विषमताओं को दूर करने हेतु सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों के मुख्य पहलू निम्न प्रकार रहे है

1. धीरे–धीरे लाभ पहुँचाने का तरीका जो समय विकास दर पर निर्भर रहा है।
2. ग्रामीण इलाकों में भूमि तथा आवासों का वितरण।
3. शिक्षा एवं प्रशिक्षणों के माध्यमों से जनसंसाधनों का विकास।
4. विभिन्न रोजगार तथा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के माध्यमों से रोजगार के अवसर उत्पन्न करना ।

इन्ही पहलुओं तथा तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए सरकार ने निर्धनता के मूलकारणों को छूने का प्रयास किया है।

कार्यक्रमों के सफल न हो पाने के उत्तरदायी कारण

योजनाकाल में चलाए गए निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों के अधिक सफल न हो पाने के मुख्यतः अग्रलिखित कारण उत्तरदायी रहे है।

1. ग्राम पंचायतों की अत्यधिक प्रभावपूर्वक भूमिका।
2. ग्राम प्रधानों की अनुभवहीनता।
3. ग्राम प्रधानों को सीधे धन का हस्तांरण।
4. गरीब ग्रामीणो का अशिक्षित होना।
5. अविकसित तथा अकुशल मानव पूँजी।

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
RNI No.UPBIL/2016/67980
Vol-I* Issue- V* August - 2016

6. दोषपूर्ण शासन व्यवस्था।
7. भ्रष्टाचार।
8. पर्याप्त वित्त का अभाव।
9. गरीब ग्रामीणों का विकास कार्यक्रमों से अनभिज्ञ होना।
10. कार्यक्रमों के मध्य, समन्वय का अभाव।
11. NGO'S की कार्य पद्धति में पारदर्शिता का अभाव।
12. संतुलित आर्थिक व्यवस्था के विकास का अभाव।
13. तकनीकी स्टाफ के अभाव में योजनाओ के विस्तृत विवरण तैयार करना संभव न हो पाना। जिसकेकारण योजनाओ के कार्यन्वयन में बाधा ।

निष्कर्ष

मानव के अस्तित्व का आधार है

समानता तथा सामाजिक न्याय समानता प्राप्ति का आधार है। समानता आधारभूत दो बिन्दुओं पर टिकी हैं। कानूनी समानता एंव तथ्यगत समानता अर्थात सरकारी कानून की दृष्टि में सभी समान है। जबकि तथ्यगत समानता से तात्पर्य आर्थिक समानता से है। समाज में सभी व्यक्तियों का जीवन सुखी एवं समृद्धशाली हो जिसके लिए सभी व्यक्तियों के समान कार्य समान संसाधनों का अधिकार, विभिन्न व्यक्तियों के मध्य आय वितरण एंव उपयोग एंव सम्पति वितरण में अनुचित विषमताओं का निषेध होना है। जबकि हमारे देश एंव प्रदेश में योजनाकाल में अपेक्षित सुधार नही हुआ है बल्कि तुलनात्मक रूप से गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर हुए है।यद्यपि सरकारी कार्यक्रमों की सफलता में राष्ट्र स्तर उत्तर प्रदेश को उच्च स्थान प्राप्त है लेकिन प्रथम स्थान पाने के लिए अभी और प्रयासों की आवश्यकता है। इनके माध्यम से गरीबी पर काफी नियंत्रण किया जा सका है। भले ही सभी गरीब निर्धनता रेखा से ऊपर न जा सके हो परन्तु उनके आर्थिक स्तर में अवश्य ही सुधार हुआ है फिर भी निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रमों को अधिक सफल बनाने हेतु सरकार को और अधिक प्रयास करने होगे। फिर अंत में कोई भी विकास की योजना तब तक पूर्णरूपेण सफल नही हो सकती जब तक क्रियान्वयन करने वाले कर्मचारियों में कर्तव्यनिष्ठा ईमानदारी और कर्मठता न हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भाटिया, बी0एम0''–गरीबी, कृषि और आर्थिक विकास'' विकास पब्लिकेषन, दिल्ली
2. देसाई वी0वी0 –''रूरल इकोनामी आफ इण्डिया'', विकास पब्लिकेषन, दिल्ली।
3. माथुर वी0एन0 गर्ग सुभाग''स्ट्रेटेजीस एण्ड प्रैक्टिस आफ रूरल डेवलेपमेन्ट आफ इण्डिया'' जयपुर
4. आचार्य एस0–''लेख – पावर्टी अनइम्लायमेण्ट रिलेशनशिप इन इण्डिया'', साहित्य रत्नालय, मेरठ।
5. अरोड़ा आर0सी0 –'' इण्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेण्ट'', एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली।
6. जैन, एस0सी0 –''रूरल डेवलेपमेण्ट इन्स्टीट्यूशन एण्ड स्ट्रेटेजीस'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
7. सिंह ए0 के0 –''रूरल डेवलेपमेण्ट इन इण्डिया'', दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. शोभन भट्टाचार्य एण्ड सिंह,एस0पी0 –''इण्डियन इकोनामी'', रावत पब्लिकेषन जयपुरं
9. अग्रवाल ए0एन0 एण्ड सिंह एस0पी0 –''इकोनोमिक्स डेवलेपमेन्ट कॉनसेप्ट'', पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली (1977)
10. सेन,ए0के0 –''इकोनोमिक एप्रोचेज'',नागरी प्रेस, इलाहाबाद।
11. लेनगे ओसकर – इकोनामिक प्लानिंग'',(बाम्बे, 1976)
12. चक्रवर्ती एस0 –''पॉलिसी मैकिंग इन मिक्स इकोनामी'' , हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
13. सिंह वी0बी0''भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
14. केशरू, ए0एम0''भारतीय अर्थशास्त्र का विकास एवं जनसंख्या वितरण, (मुम्बई 1967)
15. चक्रवर्ती एस0''पॉलिसी मैकिंग इन मिक्स इकोनामी'', हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
16. कृष्णा राज–''द ग्रोथ ऑफ एवरेज एन इम्पलायमेन्ट इन इण्डिया'', ज्ञान भारती पब्लिषिंग एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद।
17. हजारी, बी0 एण्ड कृष्णमूर्ति, जे0 –''अनइम्पलायमेन्ट ऑफ इण्डिया'', विकास पब्लिकेशन नई दिल्ली।
18. लुईस, डब्लू0 ए0 –''द थ्योरी ऑफ इकोनोमिक ग्रोथ'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर (1985)
19. कुरेन, एन0के0 –''इम्पलायमेन्ट पोटीनेट्रल इन रूरल इण्डिया–1990''
20. सिंह त्रिलोक –''इण्डियाज डेवलेपमेन्ट एक्सपीरियंस'' (दिल्ली 1974)
21. नक्स आर0 – ''प्राब्लम्स ऑफ कैपिटल फोरमेन्सन इन अण्डर डेवलपमेण्ट (दिल्ली 1973)
22. मिन्हास, वी0एस0 –''रूरल पावर्टी एण्ड डवलपमेन्ट'', (3 अप्रैल 1970)
23. मिन्हास, वी0एस0 –''प्लानिंग एण्ड पुअर''(नई दिल्ली 1978)
24. हारवे, इन्दिरा –''गरीबी हटाओ'', एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी लि0 दिल्ली, 1978
25. कुरियन, सी0टी0 –''आर्थिक आयोजना तथा विकास'' एशियन पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 1975
26. चौधरी प्रामित–''द इण्डियन इकोनामी'' (जयपुर,1978)
27. भगवती, जे0एन0एण्ड चक्रवर्ती, एस0–''कन्ट्रीब्युशन टू इण्डियन इकोनामिक्स'', पापुलर पब्लिकेशन, बम्बई
28. कुमार, अरूण –''द ब्लैक इकोनामी इन इण्डिया'' (नई दिल्ली 1999)
29. हनुमत राव, टी0एच0– ''कृषि क्षेत्र का विकास'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
30. जालान, विमला –''भारतीय अर्थ–व्यवस्था'', कृषि क्षेत्र का विकास व समस्याएं'' हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकायें

1. प्रतियोगिता दर्पण – कोठारी इन्स्टीट्यूट प्रकाशन।
2. योजना – भारत सरकार, पटियाला
3. इण्डिया टुडे – नई दिल्ली।
4. कल्याण पत्रिका –नई दिल्ली।
5. इकॉनाम इण्डिया –प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक (मनोहर मनोज कुमार) नई दिल्ली
6. कुरूक्षेत्र – ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार